# भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में काँगड़ा आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिक
## कैप्टन प्रताप सिंह वक्शी का योगदान

डॉ अमर सिंह पराशर
ऐसोसिएट प्रोफेसर, विभाग इतिहास राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला (हि.प्र).

सार - (Abstract) भारत की स्वतंत्रता संग्राम में आजाद हिंद फौज की लड़ाई 1944 में घमासान युद्ध में वदल गई। इस समय वहादुर ग्रुप के कमाण्ड़र देहरा काँगड़ा (हि.प्र.) के कैप्टन प्रताप सिंह वक्शी ने अद्भुत वीरता और युद्ध कौशल का प्रदर्शन दिया। इस लड़ाई में उन्हें "तगमा ए शत्रुनाश" का खिताव देकर सम्मानित किया।

1.भूमिका -

"कदम पे कदम वढ़ाए जा, खुशी के गीत गए जा,
ये जिन्दगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा।"

आजाद हिंद फौज़ के गीत के कौमी गीत जिसे कैप्टन प्रताप सिंह वक्शी उन सेनानियों के साथ गाया करते थे। जिन्होंने सुभाषचन्द्र वोस द्वारा संचालित आजाद हिंद फौज़ को भारत की स्वतंत्रता का आधार माना ।

2. साहित्य की समीक्षा -

मैंने यह शोध शिर्षक इसलिय चुना है क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज़ पर अनेक शोध कार्य किए गये हैं। परन्तु कॉगड़ा के स्वतंत्रता सेनानियों ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज़ जो सक्रिय कार्य किए और भारत की आज़ादी में अपना योगदान दिया, इस पर आज दिन तक किसी भी शोधार्थी ने गहनता से शोध नहीं किया है ।

3.उद्देश्य -

इस शोधकार्य में शोधार्थी का उद्देश्य काँगड़ा क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों, आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिकों तथा आम जनता की राजनीतिक गतिविधियों व कुर्वानियों को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ना हैं।

4.कार्यप्रणाली -

इस शोधकार्य में शोधार्थी ने मौखिक तथा हस्तलिखिक दोनों प्रकार की सामग्री को प्रयोग में लाया गया है । मौखिक सामग्री शोधार्थी ने अति दुर्लभ स्थानों जाकर साक्षात्कारों के माध्यम से इक्कट्ठी की गयी है तथा लिखिक सामग्री के लिए शोधार्थी ने समस्त काँगड़ा क्षेत्र का सर्वेक्षण किया है ।

5. योगदान -

कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी का जन्म 20 अक्तूबर, 1912 को वर्तमान हिमाचल प्रदेश के जिला काँगड़ा के तहसील पालमपुर के गाँव मत्याल (चढ़ियार) के एक सैनिक परिवार से हुआ । काँगड़ा के कटोच राजाओं ने इनके परिवार को 'बख्शी' की उपाधि प्रदान थी । इनके पिता का नाम ठाकुर जैसीराम तथा माता का नाम श्रीमती गंगादेवी था ।[1] कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही हुई । दसवीं की शिक्षा ग्रहण करने के लिए पालमपुर में सेंटपाल हाई स्कूल में दाखिल हुए। यहाँ से इन्होंने दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की । 1930 में इनका विवाह लम्बागाँव के सभ्रान्त परिवार में श्रीमती साहनी देवी से हुआ ।[2] कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी 1931 में ब्रिटिश सेना में भर्ती हो गए । इन्होंने लगभग ग्यारह वर्ष तक शिक्षा एवं गुप्तचर विभाग में कार्य किया ।[3]

1 सितम्बर, 1939 को यूरोप में जर्मनी द्वारा पोलैण्ड पर हमला किया जाने के बाद ब्रिटिश और फ्राँस ने पोलैण्ड को तत्काल सहायता पहुँचाने की घोषणा की । 3 सितम्बर, 1939 को विश्वयुद्ध की घोषणा हो गई । 1941 को जापान का आक्रमण भी ब्रिटिश पर अवश्यंभावी हो चुका था ।

भारतीय फौज़ भी सिंगापुर के लिए रवाना हुई परन्तु वे जापान के आगे टिक न सकी और सैंकड़ों भारतीय युद्धबन्दी बने जिनमें कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी भी एक थे ।

21 अक्तूबर, 1943 को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आज़ाद हिन्द फ़ौज का नेतृत्व संभाला । उसी दिन 'आज़ाद हिन्द सरकार' की स्थापना की गई तथा नेताजी स्वयं इसके प्रैजीडेन्ट बने । उसके उपरन्त ही उन्होंने भारत की ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध आज़ादी की घोषणा की । कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी भी काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों के उन चार हज़ार युद्धबन्दियों में आज़ाद हिन्द फौज़ के सिपाहियों में सम्मिलित हुए । जिन्होंने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के आदेश पर ब्रिटिश सेना को अलविदा कह कर का ही विरूद्ध मोर्चा संभाला था । कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी उस समय कैप्टन के पद पर थे । उनके साथ तहसील देहरा के लैफ़्टिनेंट कर्नल मेहरदास, धर्मशाला के मेज़र दुर्गामल, ऊना के कैप्टन राम सिंह ठाकुर आदि आज़ाद हिन्द फ़ौज की सशस्त्र क्राँति में सम्मिलित हुए।[4] 1944 के आरम्भ में आज़ाद हिन्द फ़ौज की आज़ादी की लड़ाई घमासान युद्ध में बदल गई । 4-5 फरवरी, 1944 को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आज़ाद हिन्द फ़ौज के जवानों को अँग्रेज़ों के विरूद्ध युद्ध की घोषणा करके अपने देशभक्त और शूरवीर जवानों को आदेश दिया कि –

"दुश्मनों के विरूद्ध हथियार उठाओ, दुश्मन का सीना फाड़कर अपना रास्ता बनाओ और दिल्ली पहुँचो।"

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने दिल्ली चलो का नारा देकर आज़ाद हिन्द फ़ौज के मतवाले सैनिकों को आगे बढ़ने के आदेश दिये । आज़ाद हिन्द फ़ौज फ़ौज ने चिड़गाँव की सीमा पारकर नागालैण्ड, मणिपुर में प्रवेश किया और तीन महीने तक इम्फाल को घेर कर रखा । आज़ाद हिन्द सरकार की आज़ाद हिन्द फ़ौज ने मणिपुर में मोरंग नामक स्थान पर अपना प्रथम आज़ादी का झण्डा गाड़ा और आज़ाद हिन्द फ़ौज की गुरिल्ला ब्रिगेड को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने स्वंय आराकान युद्ध मोर्चे पर भेजा । इसमें बहादुर ग्रुप के सैकण्ड इन कमाण्ड कैप्टन प्रतापसिंह बक्शी थे।[5]

कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी ने मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने के लिए लैफ्टिनैंट कर्नल मेहरदास के नेतृत्व में आराकान युद्ध क्षेत्र में ब्रिटिश सेनाओं से लड़ने के लिए भेजा गया । इस दस्ते में पच्चीस जवान थे । बहादुर ग्रुप के ये 25 जबान शत्रु के क्षेत्र में 8 किलोमीटर तक भीतर घुस गए। यहीं बावली बाज़ार था । 5-6 फरवरी, 1944 को इस छोटे यूनिट ने ही एक सौ से अधिक शत्रुओं का खदेड़ दिया । उन्होंने शत्रु के दो पुल उड़ा दिए तथा राशन पानी पहुँचाने में व्यवधान डाला । गुरिल्ला साधनों से 5 नबम्बर डिविजन के महत्वर्पूण रिकार्ड अपने कब्जे में ले लिए तथा 7 नबम्बर डिविजन को भारी क्षति पहुँचाई । कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी ने इस धावे में एक संतरी और एक अँग्रेज़ी आफ़िसर को मार गिराया और स्वयं घायल होकर मिशन पूरा करके वेस कैम्प में लौट आये । इस अभियान में कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी के बाँए बाजु और दायीं टाँग में गम्भीर जख्म हुए।

1 मार्च, 1944 को राशन और युद्ध सामग्री की कमी के कारण इस बहादुर ग्रुप कमान के सैनिकों को शत्रु की ब्रिगेड ने घेर लिया। इस समय में सब भूख से व्याकुल थे । 14 दिनों तक पत्तों और जड़ों आदि को खाकर गुजारा करना पड़ा । जब ये सिपाही पर्वतों और घाटियों से होकर लौट रहे थे तो उस समय शत्रु के हवाई जहाज इन पर मंडराने लगे । मृत्यु को निश्चित जानकर कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी ने गीता का स्मरण किया और आगे बढ़ गये । बमबारी पीछे हुई और वह अपने साथियों सहित सुरक्षित बच गये । बाद में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने सभी सैनिकों को आत्मसमर्पण का आदेश दिया । उसके पश्चात् इन घायल सैनिकों का उपचार जापान के अस्पतालों में हुआ ।[6] कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी को आज़ाद हिन्द फ़ौज की इस लड़ाई में बाबली बाज़ार में अभूतपूर्व साहस एवं शौर्य दिखाने के लिए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने उन्हें 5 फरवरी, 1944 को 'तमगा ए शत्रु नाश' खिताब से अलंकृत किया ।[7]

20 जून, 1944 को जापानी सेना और आज़ाद हिन्द फ़ौज को पीछे हटना पड़ा । 1945 को जापान ने हार मान ली तो आज़ाद हिन्द फ़ौज को भी आत्मसमर्पण करना पड़ा और ब्रिटिश सरकार ने आज़ाद हिन्द फ़ौज के सैनिकों को युद्धबन्दी बना लिया । कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी भी युद्ध बन्दी बनाए गये उन्हें पहले रंगून, कलकत्ता और फिर लालकिला की जेलों में भेजा गया। उन्हें लालकिले की 'ब्लैक वर्ग कैदी' के रूप में बन्द किया गया क्योंकि इन्होंने बाबली बाज़ार में एक अँग्रेज़ी सिपाही संतरी को गोली से उड़ा दिया तथा अँग्रेज़ी आफ़िसर को घायल कर दिया था । इन दिनों अँग्रेज़ों को मारने की सज़ा फाँसी होती थी ।[8]

कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी जब दिल्ली में लालकिले की काल कोठरी में बन्द थे तो उनके एक सम्बन्धी उनसे मिलने दिल्ली पहुँचे। कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी ने उनसे अपनी माँ और बेटी ईश्वरीदेवी के विषय में पूछताछ की । उन्हीं सम्बन्धियों से कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी को अपनी माँ के स्वर्गवास का पता चला । उसकी आँखों में आँसू भर आये परन्तु फिर वह एक शूरवीर की तरह कहने लगे कि -

मैं तो भारत माँ की स्वतन्त्रता के लिए प्रवृत था जो परमात्मा को मंजूर।'

कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी को अँग्रेज़ी संतरी को मारने तथा एक आफ़िसर को घायल करने के अपराध में फाँसी की सज़ा मिलनी थी । दिल्ली की लालकिला की फ़ौजी अदालत में, इन पर अन्य आज़ाद हिन्द फ़ौज के सैनिकों की तरह मुकद्दमा चला । पं. जवाहरलाल नेहरू, आसफ़अली, भोलाभाई देसाई आदि वकीलों ने इन सैनिकों के केस लड़े और जीते। 17 फरवरी, 1946 से आज़ाद हिन्द फ़ौज के युद्धबन्दी जवानों की रिहाई होने लगी । कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी को बाद में मुल्तान जेल भेज दिया गया था । वहाँ से वह रिहा हुए । जब वह जेल से रिहा हुए तो उस समय उनके पास कु□छ भी नहीं था । वह बिड़ला हाल लाहौर पहुँचे । वहाँ भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की ओर से उन्हें रास्ते का खर्च और वस्त्र प्रदान किए गए । वहाँ से वह अपने गाँव चढ़ियार पहुँचे।[10]

कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी अपने गाँव पहुँचने पर पुनः जनसेवा में प्रवृत्त हो गए । वह विकास समिति के सचिव बने । 1946 में उन्हें पालमपुर स्थित आई एन ए सूचना व राहत कार्य समिति का प्रभारी बनाया गया । उन्होंने आज़ाद हिन्द फ़ौज के सैनिकों के पुर्नवास तथा नौकरियाँ आदि दिलवाने में महत्वर्पूण भूमिका अदा की । 1950 को कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी प्रदेश कमेटी के सदस्य बने । 1952-67 तक वह पंजाब विधानसभा के विधायक व मन्त्री बने । यह पहली बार था कि पर्वतीय क्षेत्रों के विकास सम्बन्धी एक प्रस्ताव को, उन्होंने विधान सभा में प्रस्तुत किया, जिसे पंजाब विधान सभा में 3 मार्च, 1955 को पारित किया गया। 1957 व 1962 को पालमपुर विधानसभा क्षेत्र में कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी को पुनः चुना गया और वे 1957-62 तक पंजाब के प्रतापसिंह कैरों के मन्त्रिमण्डल में उपमन्त्री बने । उन्हें वन एवं पर्वतीय क्षेत्र विकास मंत्रालय का दायित्व सौंपा गया ।

कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी 1960 को आल इंडिया काँग्रेस कमेटी के सदस्य बने । वह प्रदेश काँग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष भी रहे। पंजाब राज्य के पुर्नगठन के समय कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी ने पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों का विलय हिमाचल में करवाने के लिए सहयोग दिया। 1966-67 में कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी डा. यशवन्त सिंह परमार के मन्त्रिमण्डल में राजस्व एवं पंचायत मन्त्री भी रहे । पूर्ण राज्यत्व की प्राप्ति के लिए कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी ने डा यशवन्त सिंह परमार आदि अन्य नेताओं के साथ मिलकर अपने पक्ष को राष्ट्रीय नेताओं के समक्ष रखा ।

कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी 1972 में राष्ट्रीय बचत सम्बन्धी प्रादेशिक सलाहकार बोर्ड के पूर्णकालीन उपाध्यक्ष मनोनीत हुए। साधारण जीवन व्यतीत करने वाले कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी जी को 1972 में भारत की प्रधानमन्त्री स्व श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने स्वतन्त्रता सेनानी ताम्रपत्र से भी सम्मानित किया गया । कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी अपने जीवन भर संर्घषरत् रहे। कठिनाईयों में दृढ़ संकल्प उनका मूल मन्त्र था । चाहे स्वतन्त्रता आन्दोलन हो या राष्ट्रीय निर्माण के अन्य पक्ष, उन्होंने इनमें अपनी सूझबूझ का पूर्ण परिचय दिया । अपनी ढलती उम्र में भी उनके चेहरे से दृढ़ निश्चय झलकता था ।

काँगड़ा के आज़ाद हिन्द फ़ौज के एक महान् एवं वीर स्वतन्त्रता सेनानी कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी 4 नवम्बर, 1992 को हमसे जुदा होकर अपने गाँव मत्याल (चढ़ियार) पालमपुर जिला काँगड़ा में परलोक सिधार गए ।[11]

## 6. निष्कर्ष -

काँगड़ा के आज़ाद हिन्द फ़ौज के एक महान् एवं वीर स्वतन्त्रता सेनानी कैप्टन प्रतापसिंह बख्शी का योगदान काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों में तथा भारत के इतिहास में सदा अमर रहेंगे ।

## 7. संदर्भ सूची -

1. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड़ प्रथम*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 108.

2. साक्षात्कार: श्री मती ईश्वरीदेवी सुपुत्री कै. प्रतापसिंह बख्शी, परिशिष्ट; (9) पृष्ठ 384. , Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.; देखिये,*

साक्षात्कार: श्री अर्जुनसिंह सुपुत्र कै. प्रतापसिंह बख्शी, परिशिष्ट; (10) पृष्ठ 385, Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.*

3. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड़ प्रथम*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 108.

4. संसारचन्द प्रभाकर: हिमाचली इतिहास के सुर्ख पन्ने, नीरज प्रकाशन, फतेहपुर काँगड़ा, 2002 पृष्ठ 135.

5 हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास,* भाषा एवं संस्कृति विभाग,शिमला,1996 पृष्ठ162

6. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड़ प्रथम*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 108; *देखिये,* हिमाचल प्रदेश सरकार: स्मृतियाँ, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला,1988 पृष्ठ 73.

7.हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी,खण्ड़ प्रथम*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 108; *देखिये,* हिन्दु: जालन्धर, जनवरी 13, 1993. *देखिये,* जनसत्ता:चण्डीगढ़, 21 मार्च,1993.

8. The Tribune: Chandigarh April 21, 1997; *देखिये,* संसारचन्द प्रभाकर: हिमाचली इतिहास के सुर्ख पन्ने, नीरज प्रकाशन, फतेहपुर काँगड़ा, 2002 पृष्ठ 136.

9. साक्षात्कार: श्री मती ईश्वरीदेवी सुपुत्री कै. प्रतापसिंह बख्शी, परिशिष्ट; (9) पृष्ठ 384,Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947; देखिये,* साक्षात्कार: श्री अर्जुनसिंह सुपुत्र कै. प्रतापसिंह बख्शी, परिशिष्ट; (10) पृष्ठ 385, Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.*

10. The Tribune: Chandigarh April 21, 1997

11. हिमाचल प्रदेश सरकार :स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, मृत्यु प्रमाण पत्र, कै. प्रतापसिंह बख्शी ग्राम पंचायत मत्याल; काँगड़ा (हि.प्र.) नबम्वर 4, 1992.पं नं.10. : *देखिये,* साक्षात्कार: श्री अर्जुनसिंह सुपुत्र कै. प्रतापसिंह बख्शी, परिशिष्ट; (10) पृष्ठ 385, Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947*